an>

Title: Need to utilise the services of non-governmental organisations for proper rehabilitation of homeless children in the country.

डॉ. वीरेन्द्र कुमार (टीकमगढ़) ः बच्चे देश का भविष्य हैं। बच्चों का भविष्य बनाने में माता-पिता, परिवार और समाज की अहम भूमिका होती है। दुर्भाग्य से कुछ बच्चे अपने परिवार एवं अपनों से अलग हो जाते हैं। परिवार में होने वाले तनाव, दुनिया की चकाचौंध का आकर्षण, मेलों, स्टेशनों एवं भीड़ में खो जाना, अपहरण होना, अनाथ होना, अधिक गरीबी के कारण मां-बाप द्वारा बाल मजदूरी में भेजा जाना, पुलिस द्वारा डाले गये छापों में पकड़े जाने वाले बच्चों को पुलिस बाल गृहों में लाकर छोड़ देती है।

देशभर में सरकारी और गैर-सरकारी बाल गृहों की संख्या 600 से अधिक है जिनमें डेढ़ लाख से अधिक बच्चे रह रहे हैं। बाल गृहों में बच्चों को पौष्टिक भोजन, कपड़े, समुचित शिक्षा, संस्कार, चिकित्सा, मनोरंजन जैसी बुनियादी सुविधाओं के साथ घर जैसा सुरक्षित माहौल मिलना चाहिए। परन्तु देखने में आता है कि कई बाल गृहों में यह अपेक्षित सुविधाएं नहीं मिलती हैं तथा बच्चों को अप्रिय स्थिति का सामना करना पड़ता है, जिससे वे अपराधिक मानसिकता, नशाखोरी एवं ड्रग्स जैसी बुरी आदतों का शिकार हो जाते हैं।

"माय होम इंडिया" नामक सामाजिक संगठन ने इस दिशा में काफी सराहनीय कार्य किया है। ऐसे खोये हुए बच्चों को उनके परिवार से मिलाने का कार्य इस संगठन ने अपने हाथ में लिया है। सिर्फ तीन वर्ष की सीमित अवधि में इस सामाजिक संगठन ने 12 जून, 2016 तक 4 राज्यों के 29 बाल गृहों में से 1030 बच्चों के जीवन में खुशियां लाने का कार्य किया है। सुनील देवधर जी द्वारा किया गया कार्य प्रशंसनीय है।

मेरा केंद्र सरकार से अनुरोध है कि पुलिस प्रशासन तथा "माय होम इंडिया" जैसी सामाजिक संस्थाओं का सहयोग लकर बेघर बच्चों को सपनों से अपनों तक पहुंचाने की कार्य योजना बनाकर शीघ्र कार्यवाही करने का सहयोग करें।